

शिक्षा प्राप्त कर नहीं पालें अहंकार - राज्यपाल श्री कलराज मिश्र

जयपुर / अजमेर, 17 दिसम्बर। मयूर स्कूल के 43 वे वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह में राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कहा कि शिक्षा प्राप्त कर किसी प्रकार का अहंकार नहीं पालना चाहिए। उन्होंने संविधान की उद्देशिका का वाचन कराया तथा मूल कर्तव्यों की जानकारी दी।

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कहा कि शिक्षा जीवन को गढ़ती है। वही समाज आगे बढ़ता है जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी होता है। शिक्षा की नींव विद्यालय ही तैयार करते हैं। विद्यालय केवल शिक्षा प्रदान करने के केन्द्र ही नहीं होते बल्कि हमारे यहां इसे संस्कार निर्माण की पाठशाला से जाना गया है। शिक्षा समस्त प्रकार के बन्धनों से मुक्त कराती है। इसके बहुत गहरे अर्थ हैं। हम उदात्त जीवन मूल्यों की ओर प्रवृत्त हों। शिक्षा प्राप्त करने के बाद हम उसे पाने का अहंकार नहीं पालें। हम बहुत अच्छा करें परन्तु अपने किए पर कभी अभिमान नहीं करें।

उन्होंने कहा कि राष्ट्र सर्वोच्च है। उसके प्रति हमारे कर्तव्य के लिए सदा प्रतिबद्ध होकर कार्य करने की आवश्यकता है। हम संविधान की संस्कृति से निरन्तर जुड़े रहें। भारतीय संविधान अधिकारों और कर्तव्यों का बहुत सुन्दर समन्वय है। भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का संविधान एक प्रकार से संवाहक है।

उन्होंने कहा कि संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर थे। उनके निर्देशन में भारत का संविधान लिखा गया। शान्ति निकेतन के महान कलाकार श्री नन्दलाल बोस और उनके शिष्यों ने इसमें चित्रा उकेरे। संविधान में 22 भाग हैं। हर भाग की शुरुआत में चित्रा बने हैं। श्री नन्दलाल बोस के निर्देशन में शान्ति निकेतन के कलाकारों ने अद्भुत चित्रा बनाए हैं। इनमें मोहन-जो-दड़ो, वैदिक काल, रामायण, महाभारत, बुद्ध के उपदेश, महावीर के जीवन, मौर्य, गुप्त काल, इसके अलावा सुभाष, हिमालय से लेकर सागर आदि के चित्रा बहुत सुन्दर हैं। संविधान की मूल प्रति के चित्रा भारतीय इतिहास की भी एक प्रकार से विकास यात्रा है। उन्हें देखने के पश्चात लगता है कि एक-एक भाग उसके चित्रा देश के लोकतन्त्रा का सन्देश है। मौलिक अधिकारों में गीता का सन्देश है। संविधान का उपयोग समाज को दिशा देने में होता है। मूल संविधान में चित्रा है। उसकी प्रतियों में नहीं है। संविधान पार्क में सभी संदेशों को स्थान दिया गया है। उद्देशिका और मौलिक कर्तव्यों की जानकारी होनी चाहिए। संविधान सभी को अपना बनाता है। राष्ट्र को सर्वोच्च माना गया है।

उन्होंने कहा कि भारत का संविधान हमारा सर्वोच्च विधान ग्रंथ ही नहीं है बल्कि यह भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्य की उदार दृष्टि का संवाहक है। संविधान निर्माण के पीछे की मूल मानसिकता लोकतन्त्रा के मूल्यों में विश्वास जगाती है। संविधान की संस्कृति से सभी नागरिकों का जुड़ाव रहा। राजभवन में संविधान उद्यान का निर्माण करवाया है। संविधान को वहां मूर्तियों और कलात्मक निर्माण में जीवन्त देखा जा सकता है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा वही सार्थक है जो जीवन के आलोक पथ से जुड़ी हो। संविधान की शिक्षा भी इसलिए जरूरी है। हम जो पढ़ें उसे रटें नहीं, मन से जिएं। परीक्षा जरूरी है पर उससे जुड़ी शिक्षा मानव को मशीनी बनाती है। प्राचीन भारत में किसी प्रकार की परीक्षा नहीं होती थी। न कोई उपाधि ही दी जाती थी। अभ्यास नियम से करने का पता आचार्य लगा

लेते थे। विद्यार्थी अध्ययन और अनुसंधान में सदैव लगे रहते थे। इसके बाद विवाद और शास्त्रार्थ में सम्मिलित होकर अपनी योग्यता का प्रमाण देते थे।

उन्होंने कहा कि भारतीय शिक्षा में आचार्य का स्थान बड़ा ही गौरव का था। उनका बड़ा आदर और सम्मान होता था। आचार्य पारंगत, विद्वान और सदाचारी होते थे। वे विद्यार्थियों के कल्याण के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। शिक्षा में अध्यापक, छात्रों के चरित्रा निर्माण पर सर्वाधिक ध्यान देते थे। विद्यार्थी भी गुरु का सम्मान और उनकी आज्ञा का पालन करते थे। आचार्य का चरण स्पर्श कर दिनचर्या के लिए प्रातःकाल ही प्रस्तुत हो जाते थे। अध्यापन भी विद्यार्थी के योग्यतानुसार होता था। विषयों को स्मरण रखने के लिए कथा, कहानियों और उद्धरणों से गुरु समझाते थे। आधुनिक संदर्भों में भी शिक्षा की इसी पद्धति पर कार्य करने की आवश्यकता है। नई शिक्षा नीति के आलोक में विकसित भारत 2047 के लिए विद्यार्थी तैयार होने के लिए शिक्षण संस्थानों की ही भविष्य में सवाधिक प्रासंगिकता रहनी है।

मयूर स्कूल में 43 वें वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह का समापन

मयूर स्कूल के 43 वें वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह के समापन कार्यक्रम में स्कूल के लगभग 200 विद्यार्थियों द्वारा केसेंडो नामक ओर्केस्ट्रा की शानदार प्रस्तुति दी गई। जो राग किरवानी में सरगम, बंदिश, तराना एवं गत के माध्यम से बेला सियाओ और सासपुतिन गाने का केसियों आदि विभिन्न वाद्ययंत्रों ने तबला, सिता, हारमोनियम, गिटार, वायलिन, ड्रम, कौंगा, केसियो आदि विभिन्न वाद्ययंत्रों के सुन्दर सामजस्य का परिचय देते हुए एक शानदार प्रस्तुति दी।

मयूर स्कूल कमेटी के चैयरमैन ठाकुर सिद्धार्थ सिंह रोहित ने स्वागत भाषण में राज्यपाल कलराज मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचय करवाया। प्राचार्य श्री संजय खाती ने वार्षिक प्रतिवेदन में कहा कि मयूर स्कूल एक अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल की छवि में अपनी अमिट छाप छोड़ने को तैयार है। विद्यालय में आयोजित गतिविधियों ने यहां के विद्यार्थियों को विद्यालय के अतिरिक्त समाज, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक क्षेत्र में सफल प्रदर्शन के लिए तैयार किया है।

इस अवसर पर सम्भागीय आयुक्त श्री सी.आर.मीणा, पुलिस महानिरीक्षक श्रीमती लता मनोज कुमार, जिला कलक्टर डाॅ. भारती दीक्षित एवं पुलिस अधीक्षक श्री चूनाराम जाट उपस्थित रहे।



